ISSN: 2349-4654

नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक वर्ष : 8, अंक : 2, दिसंबर 2020

सौंदर्यपूर्ण एकल तबला वादन प्रस्तुतिः एक चिंतन

सचिन कचोटे

शोधार्थी, संगीत विभाग, द. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ोदरा

Paper recieved on : October 20, Accepted on December 14, 2020

सार-संक्षेप

'तबला' यह लय-ताल वाद्य के रूप में सर्वश्रेष्ठ मान्यता प्राप्त अवनद्ध वाद्य है। तबले की सबसे बड़ी उपलब्धि है—'एकल तबला वादन प्रस्तुति, इसकी प्रमुख वजह है इस वाद्य की सर्वगुणसंपन्नता। तबले की बनावट एवं बाज के आधार पर, इसी के फलस्वरूप तबले की भाषा का एवं वादन का सर्वांगीण विकास हुआ है और तबले ने 'स्वतंत्र रूप से प्रस्तुत होने वाला प्रमुख तालवाद्य के रूप में संपूर्ण संगीत समाज में गौरव प्राप्त किया है। तबला वादन कला में रियाज़ एवं वादन प्रस्तुति का समान महत्व है, अर्थात् इस सर्वश्रेष्ठ वाद्य का रियाज़ एवं वादन प्रस्तुति दोनों ही उतनी ही श्रेष्ठतम होनी चाहिए, ऐसा शोधार्थी का विचार है। प्रभावी वादन प्रस्तुति के साथ साथ तबला वादन सौंदर्यपूर्ण किस तरह किया जा सकता है? यह इस शोध-पत्र का प्रमुख उद्देश्य है। क्या रियाज़ और सौदर्यपूर्ण प्रस्तुति का पस्पर संबंध है? इस बात को उज़ागर करते हुए सौंदर्यपूर्ण प्रस्तुति के प्रमुख तत्वों को समझाने के साथ साथ तबले के रियाज़ पर भी प्रकाश डाला गया है। साथ ही, शोधार्थी ने सौंदर्य तत्वों की चर्चा करते हुए, तबले की परंपरागत बंदिशे एवं उनमें निहित सौंदर्य पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया है। इन विचार तथा अनुभव से तबला साधक जरूर लाभान्वित होंगे, ऐसा शोधार्थी का विश्वास है। प्रस्तुत शोध-पत्र का यह भी उद्देश्य है कि, सौंदर्यपूर्ण एकल तबला वादन प्रस्तुति के साथ-साथ एकल तबला वादन की विधिवत वादन प्रक्रिया का अवलोकन करते हुए तत्पश्चात रचनाक्रम एवं उनके महत्व को समझाना। प्रस्तुत शोध-प्रबंध लिखने के लिए माध्यमिक स्त्रोतों का सहारा लिया गया है।

मुख्य शब्द : एकल तबला वादन, सौंदर्यपूर्ण, रियाज़, मुरक्का, पढंत

शोध-पत्र

तबला की सबसे बड़ी उपलब्धि है—'एकल तबला वादन प्रस्तुति'। स्वतंत्र रूप से प्रस्तुत होने वाला एक अवनद्ध वाद्य, ऐसी तबले की विशेष पहचान बन गई है और संगीत जगत में इस वाद्य का यही अस्तित्व है तथा इसमें श्रेष्ठत्व भी प्राप्त किया है। स्वतंत्र तबला वादन यानी एकल तबला वादन का सौंदर्यपूर्ण होना बहुत आवश्यक है। तबला वादक के व्यक्तिगत व्यक्तित्व के साथ-साथ उसके सांगीतिक व्यक्तित्व की प्रतिभा भी महत्वपूर्ण होती है। वादक की अपनी कला प्रस्तुति उसको मिली हुई सही तालीम तथा उसके अभ्यासपूर्ण रियाज़ में निहित होती है। एक सधे हुए वादक कलाकार की नींव योग्य मार्गदर्शन तथा रियाज़ पर निर्भर करती है। एक यशस्वी कलाकार की यही परिभाषा होगी, यह नि:संशय है। तबला वादक के लिए यह बहुत आवश्यक है कि उसकी योग्य शिक्षा के आधार पर ही वादक अपनी प्रस्तुति को 'तैयार' हो पाता है। लेकिन, इस विचारपूर्ण अध्ययन पद्धति के साथ-साथ प्रत्यक्ष वादन प्रस्तुति यानी मंच प्रदर्शन का भी पूर्वविचार होना आवश्यक है। तबला वादन प्रस्तुति उतनी ही सौंदर्यपूर्ण होना आवश्यक होता है। सौंदर्यपूर्ण तथा प्रभावी एकल तबला वादन प्रस्तुति के कुछ प्रमुख सौंदर्य तत्वों की विविध अंगों की चर्चा करेंगे।

क्या केवल प्रभावी दिखने से प्रभावी तबला वादन की कल्पना की जा सकती है?....नहीं! वादक के आत्मविश्वासपूर्ण आगमन में ही उसके प्रभावी तबला वादन की पूर्वसूचना मिल जाती है। वादक की प्रसन्न मुद्रा, आत्मविश्वासपूर्ण आगमन, वाद्य के प्रति तथा अपनी कला के प्रति सच्चा प्रेम, लगाव और अपने गुरुपर संपूर्ण विश्वास, यें आदर्श तबला वादक के गुण होते है। मेरे खयाल से, वादक के प्रत्यक्ष वादन प्रस्तुति की यही सही 'आमद' है। इसी विश्वास के साथ, वादक के वादन प्रस्तुति का सही अनुमान लग जाता है, जो गुणीजन एवं गुरुजनों के नजर से बिलकुल नहीं छिपता। प्रभावी तबला वादन के संदर्भ में दूसरी एक महत्वपूर्ण बात यह है कि, बगैर 'रियाज़' के प्रभावी तबला वादन प्रस्तुति की कल्पना भी नहीं की जा सकती। मेरे विचार से, तबले की प्रभावी प्रस्तुति, वादक ने किए हुए रियाज़ पर निर्भर रहती है, इसलिए प्रस्तुति की सबसे पहली और महत्वपूर्ण सीढ़ी है, 'रियाज़'। तबला साधक के वादन में उसका रियाज़ ही झलकता है, इसलिए तबला वादन में 'रियाज़' का महत्व अनन्य साधारण है। साधक को मिली हुई सही तालीम, उस पर ली गई प्रामाणिक मेहनत यानी अभ्यासपूर्ण रियाज़ से प्रभावी तबला वादन की, जोरदार तथा दमदार तबला वादन की कल्पना जरूर की जा सकती है, लेकिन..... क्या केवल रियाज़

से सौंदर्यपूर्ण प्रस्तुति का विचार भी हो सकता है। रियाज़ से प्रभावी वादन की अपेक्षा पूर्ण हो पाती है, लेकिन सौंदर्यपूर्ण प्रस्तुति के लिए, नज़ाकतदार वादन के लिए वादक को प्रस्तुति के और भी महत्वपूर्ण अंगों का विचार करना आवश्यक है, ऐसा मेरा मत है। रियाज़ अपनी जगह पर है, लेकिन सौंदर्यपूर्ण प्रस्तुति एक अलग विचार है, एक दृष्टिकोण है और इन सबके लिए, वादक के अभ्यास, रियाज़ के साथ-साथ उसका 'चिंतन' भी सबसे महत्वपूर्ण है। अभ्यासपूर्ण रियाज़ की भूमिका बनाते हुए तबले पर किया गया चिंतन ही चिरंतन रहता है, यह नि:संशय है।

16 नवंबर 2019 में दिल्ली में हुई राष्ट्रीय तबला संगोष्ठी में शोधार्थी ने अपने शोध-पत्र प्रस्तुति हेतु सहभाग लिया था, जिसकी सम्माननीय अध्यक्षा थी ज्येष्ठ शास्त्रीय गायिका विदुषि श्रुति सड़ोलीकर-काटकर। उन्होंने अपने अनुभवपूर्ण वक्तव्य में रियाज के बारे में कहा था, "प्रत्येक गायक-वादक कलाकार के जीवन का लक्ष्य होना चाहिए—रियाज़। संगीत और ईश्वर दोनों ही अमूर्त चीजे है, जिनका अनुभव केवल रियाज़ से एकनिष्ठ रहकर ही हो सकता है। पहले कुछ सालो तक विद्यार्थी का प्राथमिक एवं महत्वपूर्ण रियाज़ गुरु के सम्मुख होना जरूरी है। शास्त्रीय संगीत की घरानेदार मूल्यों का, तत्वों का जतन एवं रक्षण केवल रियाज़ से ही संभव है।"[1]

इसी नींव के आधार पर तबला वादन प्रस्तुति के प्रमुख सौंदर्यपूर्ण अंगों का विचार किया जा सकता है। वादक के विचार-विकास के साथ-साथ उसका वादन विकास तथा वादन-कौशल्य विकास होना भी आवश्यक होता है। वादन-विचार-कौशल्य की इसी परिपक्वता से वादक, अपने आप को सौंदर्यपूर्ण प्रस्तुति हेतु समर्थता से प्रस्तुत कर पाता है तथा वह पात्र भी बन पाता है। और यहीं से वादक के सौंदर्यपूर्ण अंगों का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। आगे हम, एकल तबला वादन प्रस्तुति हेतु कुछ सौंदर्यपूर्ण अंगों का विचार करेंगे।

वाद्य का चयन

सौंदर्यपूर्ण तथा प्रभावी वादन हेतु, वादक के लिए सबसे पहली जरूरत होती है—'सुरीला तथा अच्छी बनावट का वाद्य'। वाद्य अच्छी बनावट का तथा सुरीला हो तो ही अपेक्षित बोलो की निकासी भी संभव हो पाती है। इसलिए, दायाँ-बायाँ की बनावट सही तरीके की होनी चाहिए। अच्छी बनावट तथा योग्य तरीके से ढाला हुआ दायाँ-बायाँ ही अच्छी तरह से सुर में मिलाया जा सकता है और अपना वाद्य सुर में योग्य तरीके से मिलाना, यही से वादक के वादन कौशल्य का पहला परिचय होता है, सबसे पहला प्रभाव होता है। तबला वादक लयदार होना आवश्यक है, लेकिन इससे भी पूर्व, व सुरीला होना आवश्यक है, जिससे उसका वादन भी सुरीला हो सकें। सुर के अध्ययन की इसी सूक्ष्मता के आधार पर वादक अपना 'दायाँ' और 'बायाँ' भी सुरीला मिला पाता है। इसलिए, वादक को स्वर ज्ञान का होना अत्यन्त आवश्यक है। मेरे विचार से, सुरीला वाद्य के चयन के साथ-साथ अपने वाद्य को सुरीला मिलाना, यहीं वादक के सौंदर्यपूर्ण तथा प्रभावी एकल तबला वादन प्रस्तुति का प्रथम पाठ होना चाहिए। इसके साथ-साथ वादक का शारीरिक, बौद्धिक तथा मानसिक संतुलन अच्छा रहना भी सबसे जरूरी है, इसी भूमिका के आधार पर वादक के आत्मविश्वासपूर्ण वादन की यात्रा शुरू होती है।

नगमे की अच्छी जान-पहचान

तबला वादक ने लयदार नगमा वादक को चुनना सबसे आवश्यक होता है। सुरों से संस्कारित तथा सुपरिचित तबला वादक ही नगमे का सही रूप से आनंद ले पाएगा। एकल तबला वादन प्रस्तुति के कला मंच पर नगमा वादक तानपुरे के सुरों की गूँजन के साथ-साथ नगमे की शुरूआत करते हुए एक-एक सुरों को भरता हुआ समा बाँधना शुरू करता है तथा पोषक-अनुरूप वातावरण तैयार करता है। नगमा वादक को, मुख्य तबला वादक के साथ-साथ श्रोतागण की भी दाद मिलती है। नगमा वादक की यह कोशिश रहनी चाहिए की प्रस्तुति के समय काल अनुसार राग का चयन करें, जिसका बड़ा ही परिणाम संपूर्ण कला प्रस्तुति पर होता है। इससे पोषक तथा योग्य वातावरण की निर्मिति होती है। यहाँ पर, तबला वादक को नगमें की आलापचारी का आनंद लेते हुए बड़ी ही सजगता से आवर्तन को समझ लेना चाहिए। नगमें के निश्चित आवर्तन में सम तथा खाली का स्थान तथा उन पर उपयोग किए गए सुरों को भलि-भाँति जाँच लेना चाहिए। तबला वादक के प्रत्यक्ष वादन प्रस्तुति में ये बातें बड़ी ही मायने रखती है। इसी श्रृंखला के साथ, तबला वादक स्वयं आनंद तो लेता ही है तथा अपनी प्रस्तुति से श्रोताओं को आनंद देता है।

सौंदर्यपूर्ण एकल तबला वादन प्रस्तुति के बारे में अपने विचार रखते हुए मेरे मार्गदर्शक गुरु डॉ. अजय अष्टपुत्रे, बड़ोदरा कहते है, "एकल तबला वादन प्रस्तुति में तबला वादक का सौंदर्यात्मक वादन-विचार झलकना चाहिए तथा प्रत्यक्ष वादन में वह अभिव्यक्त होना चाहिए। वादक ने अपनी प्रस्तुति सौंदर्यपूर्ण बनाने हेतु, रचनाओं की खाली-भरी का विचार, बंदिश में निहित लय-लयकारी और गद्य-पद्य व्याकरण विचार एवं भाषा सौंदर्य विचार, इत्यादि सौंदर्यतत्वों का उपयोग करना चाहिए। इसके साथ ही, और एक महत्वपूर्ण बात यह है कि, वादक ने अपनी प्रस्तुति में दायाँ और बायाँ दोनों ही को सम-समान महत्व देना और भी आवश्यक होता है। दायाँ यानी तबला यह षड्ज सुर में मिलाया जाता है, उसी प्रकार बायाँ को भी गंधार, मध्यम, पंचम, मंद्र धैवत्-निषाद, इत्यादि अनुरूप सुर में मिलाना आवश्यक है। इन सबसे वादन प्रस्तुति सौंदर्यपूर्ण होगी, यह निःसंदेह है। अर्थात, तबला वादक को सुरों से भली-भाँति परिचित एवं संस्कारित होना जरूरी होता है, जिससे उसकी वादन प्रस्तुति में सुर-नाद का अनुभव मिल पाए। इसका अनुभव, वादक को पेशकार जैसी रचना में जरूर मिलता है। इन सभी के फलस्वरूप, तबला वादक की वादन प्रस्तुति सर्वांगीण दृष्टिकोण से सौंदर्यपूर्ण बनती है तथा उसका वादन-संगीत निश्चित रूप से कर्णप्रिय एवं कर्णमधुर बनता है, जो सबसे महत्वपूर्ण है।"[2]

ठेका वादन

तबला वादक, नगमे से प्राप्त निश्चित लय आवर्तन के साथ ठेके का पहला आवर्तन बजाते हुए वादन का आरम्भ करता है। इस बीच, लय अंग से ठेकाभरी की सौंदर्यपूर्ण आवृत्तियों का क्रमबद्ध वादन होता है। ठेका वादन में नादमयता, आसदार-लयदार ठेका, वजनदार ठेका वादन, इत्यादि बातों से ही वादक के हाथ का सही वज़न तथा उसका रियाज़ नजर में आता है। वादक की लय अंग की ठेका भरी, भरणायुक्त ठेका वादन तथा विविध मात्राओं से चलकर छोटी-छोटी कलात्मक तिहाई लेकर समय पर आने की नजाकत इत्यादि वादन क्रियाओं से ठेके की सुंदरता और भी बढ़ जाती है। मेरे विचार से, सौंदर्यपूर्ण एकल तबला वादन प्रस्तुति में प्रत्यक्ष वादन के अंतर्गत वादक का मूल तत्व है—'ठेका वादन'।

17 सितंबर, 2019, बडोदरा में हुए राष्ट्रीय तबला कार्यशाला में ठेकावादन के बारे में मार्गदर्शन करते हुए ज्येष्ठ तबला वादक पं. ओंकार गुलवाडी जी ने अपने विचार रखते हुए कहा, "एकल तबला वादन और तबले की साथ संगत दोनों में दायाँ-बायाँ के योग्य संतुलन के साथ साथ ठेका वादन भी महत्वपूर्ण है। दोनों में सुर-लय का समान महत्व रहता है। ठेका ठेका ही होना चाहिए, वह ठोका नहीं होना चाहिए। ताल एक ही होता है, लेकिन तालों के अनेक ठेके होते हैं, इसलिए तबला साधक ने अपनी सौंदर्यपूर्ण वादन प्रस्तुति हेतु 'ठेके का रियाज़' विविध लय में करना और आवश्यक है।"[3]

प्रस्तुत चर्चा को आगे बढ़ाते हुए, महत्वपूर्ण अंगों की चर्चा में तीन ताल तथा उसमें निहित विविध रचना प्रकारों का सोदाहरण विवेचन करेंगे।

विलंबित तीनताल का ठेका—

×धाऽत्रक	धींऽऽऽ	धींऽधींऽ	धाऽऽऽ।
2धाऽत्रक	धींऽऽऽ	धींऽधींऽ	धाऽऽऽ।
0धाऽधागे	तींऽऽऽ	तींऽतींऽ	ताऽऽऽ।
3ताऽतिरकिट	धींऽऽऽ	धींऽधींऽ	धाऽतीत्। धा×

13 वी मात्रा से तिहाई—

ऽऽधाऽधींऽनाऽ	धाऽऽऽऽऽधाऽ	धींऽनाऽधाऽऽघे	नाऽधाऽतींऽनाऽ। धा×

पेशकार प्रस्तुतीकरण

'पेशकार', वादक का स्वतंत्र विचार होता हैं। सौंदर्यपूर्ण ठेका वादन के बाद वादक पेशकार का अपना विचार रखते हुए पहला आवर्तन शुरू करता है, लेकिन इसके भी पूर्व, ठेका और पेशकार वादन के बीच का भी एक सौंदर्यपूर्ण विचार हो सकता है, जैसे पेशकार के पहले आवर्तन के पूर्व पेशकार के स्वरूप की छोटी सी परछाई दिखानेवाली 'तिहाई का वादन'। प्रस्तुत तिहाई वादन में, पेशकार का स्वरूप निहित होता है तथा वादक का वादन हेतु अगला विचार भी समझ में आता है। संक्षेप में, ठेका और पेशकार वादन के इस बीच के सौंदर्यपूर्ण वादन सफर में वादक की पेशकार वादन के विचार की पूर्वकल्पना मिलती है।

पेशकार के रियाज़ के बारे में मेरे गुरुवर्य ज्येष्ठ तबला वादक पं. अरविंद मुळगाँवकर जी अपने 'तबला' इस ग्रंथ में लिखते है, "भारतीय संगीत के क्षेत्र में बहुत पहले से प्रसिद्ध खानदानी कहावत है—देखना, सुनना, परखना और बजाना। यह उपदेश विशेष रूप से पेशकार के लिए अधिक उपयुक्त है। जो कुछ बजाया जा रहा है, उसका बारीकी से निरिक्षण करे, श्रेष्ठ वादको को सुने, प्रत्येक अक्षर का, बोल का निकास कैसा है, इसके बारे में मन एकाग्र करके परखे और अंत में रियाज़ (मेहनत) करे। उपरोक्त सभी बातों को ध्यान रखते हुए अपने वादन को किसी कसौटी पर कड़ाई से परखे। उसमें उत्तीर्ण होने के बाद ही आप उत्कृष्ट दर्जे का पेशकार 'पेश' कर सकेंगे।"[4]

जैसे; बाहरवी मात्रा से तिहाई वादन—(पौने पाँच मात्रा की तिहाई)

ऽऽधाऽऽक्डधाऽऽ।	3तींऽनाऽधाऽऽऽ	धाऽऽक्डधाऽतींऽ
नाऽधाऽऽऽधाऽ	ऽक्डधाऽतींऽनाऽ।	धा×

उपर्युक्त, तिहाई वादन से वादक के पेशकार वादन की यह पूर्वसूचना दिखाई देती है कि, वह अपने पेशकार वादन में पूर्णविराम विचार सव्वामात्रा (1¼) यानी धाऽऽक्डधाऽतींऽ नाऽ इस तरह से रखना चाहता है। इसी विचार को निश्चित तथा कायम रखते हुए, वादक अपने पेशकार का मुख सामने रखता है। देखिये, ठेका वादन से निकली इस सौंदर्यपूर्ण तिहाई के आधार पर तथा अनुरूप पेशकार के मुख का वादन विचार किस तरह सामने आ रहा है...

पेशकार मुखः

×धींऽऽक्डधींऽऽधा	ऽगधाऽतीत्धाऽ	धाऽधींऽनाऽधाऽ	ऽक्डधाऽतींऽनाऽ।
2तकघिडाऽनधाऽ	तीत्धाऽधींऽनाऽ	धाऽऽघेनाऽधाऽ	ऽक्डधाऽतींऽनाऽ।
0तींऽऽक्डतींऽऽता	ऽकताऽतीत्ताऽ	ताऽतींऽनाऽताऽ	ऽक्डताऽतींऽनाऽ।
3तकघिडाऽनधाऽ	तीत्धाऽधींऽनाऽ	धाऽऽघेनाऽधाऽ	ऽक्डधाऽधींऽनाऽ। धा×

उपर्युक्त, तिहाई अनुरूप पेशकार का मुख देखा जाएँ तो दोनों में एक नजदीकी संवाद दिखाई देता है। मूलत: वादक के वादन विचार की यह नवीनता है तथा विधायक परिवर्तन भी है, जो निश्चित ही सौंदर्यपूर्ण है। पेशकार के मुख स्वरूप अनुसार, (याने अंत्यबिंदू में सवाई का विचार रखते हुए) अगर वादक उपर्युक्त विचार को कायम रखते हुए लय-लयकारी अंग तथा विविध बोल समूह, तिहाईयों के आधार से पेशकार की सौंदर्यपूर्ण तथा क्रमबद्ध बढ़त करने में सफल होता है, तो यहीं उसके बुद्धि कौशल्य का असली परिचय होगा। इसलिए, पेशकार वादन को वादक का अभ्यासपूर्ण विचार कहा गया है तथा इसी प्रगल्भ विचारयुक्त पेशकार के आधार से वादक का बुद्धिकौशल्य भी झलकता है, जो सौंदर्यपूर्ण होता है। वादक, पेशकार वादन की सिलसिलेवार बढ़त का प्रवाह आगे कायम रखते हुए प्रस्तार में दाएँ का सुर, चाँटी का कम-अधिक दाब तथा नाद, बाएँ की गाज मींड, घुमक, घुमारा, नाद-दीर्घता- ह्रस्वता, दायाँ-बायाँ का नज़ाकतदार तथा मुलायम आघात, जोरदार आघात, दायाँ-बायाँ का अच्छा संतुलन, वादन में सुर की अनुभूति, नादमयता, इत्यादि वादन कृति-गुण-विशेषणों से पेशकार को

अक्षरश: सजाता है, सौंदर्यपूर्ण बनाता है। मेरे विचार से, रियाज़ी तबला साधक के अभ्यासपूर्ण एवं सौंदर्यपूर्ण प्रस्तुति का उत्कृष्ट उदाहरण हैं—'पेशकार वादन'।

पेशकार की तिहाईः—(तेहरवी मात्रा से)

$_{3}$तकघिडाऽनधाऽ तींऽनाऽघेऽनाऽ धाऽतींऽनाऽधाऽ ऽक्डधाऽतींऽनाऽ। धा$_{\times}$

कायदाः

विद्वानों का अनुभवपूर्ण कथन है, "कायदे के रियाज़ से हाथ तैयार होता हैं।" प्रस्तुत कथन से ही कायदा वादन का महत्व समझ में आता है। अपनी सौंदर्यपूर्ण एकल तबला वादन प्रस्तुति में, पेशकार वादन के माध्यम से दाएँ-बाएँ के योग्य संतुलन-संयोग का दर्शन कराते हुए वादक अपनी अगली प्रस्तुति के लिए तैयार रहता है और वह प्रस्तुति होती है—'कायदा वादन'। कायदा वादन में सबसे महत्वपूर्ण है कायदे के मुख के बोलों के अनुरूप ठेकाभरी तथा सौंदर्यपूर्ण तिहाई लेकर कायदे के मुख की शुरूआत करना। उदाहरण तौर पर—'तिरकिट' का कायदा बजाने पूर्व उसी बोल के आधार पर ठेका भरी और 'त्रक' कायदे की तदनुरूप ठेकाभरी, इत्यादि।

कायदे की सौंदर्यपूर्ण प्रस्तुति की चर्चा में, मैं यहाँ पर मेरे गुरु ज्येष्ठ तबला वादक गुरुवर्य पं. अरविंद मुळगाँवकरजी (फर्रूखाबाद घराना) द्वारा रचित एक चतुःस्त्र जाति के कायदे का उदाहरण देना चाहूँगा। कायदे के मुख के वादन की पूर्व तिहाईः

(तेरहवी मात्रा से)

$_{3}$ऽऽताकेतिरकिट तगधींऽऽऽताके तिरकिटतगधींऽ ऽऽताकेतिरकिट। $_{\times}$तगधींऽ

कायदाः तीनताल (चतुःस्त्र जाति)

(रचनाः गुरुवर्य पं. अरविंद मुळगाँवकरजी)

मुखड़ाः

$_{\times}$ताग्धींऽऽऽधागे	तिरकिटताग्धिन	तिरकिटताग्धिन	तागधिननानागिन।
$_{2}$ताकेतिरकिटताग्	धिन्नानागिनधागे	तिरकिटताग्धिन	तागधिननानाकिन।
$_{0}$ताग्तींऽऽऽताके	तिरकिटताकतिन	तिरकिटताकतिन	ताकतिननानाकिन।
$_{3}$ताकेतिरकिटताग्	धिन्नानागिनधागे	तिरकिटताग्धिन	तागधिननानागिन।[5]

उपर्युक्त तिहाई एवं मुख का यह एक सौंदर्यपूर्ण संवाद है, एक सौंदर्यपूर्ण वादन विचार है। कायदे के प्रस्तार अंग में बढ़त करते हुए कायदे की सिलसिलेवार बढ़त होना आवश्यक होता है। सिलसिलेवार बढ़त (मुख के बोलो के आधार पर) यानी कायदे के पलटों की क्रमबद्ध बढ़त। कायदे के प्रत्येक पलटो में प्रस्तार के मध्य हर अगले तथा पिछले पलटे में एक अंतर्गत संवाद होना चाहिए तथा उसी अनुसार कायदे के पलटो की क्रमबद्धता होनी चाहिए। कायदे की यह एक सौंदर्यपूर्ण बढ़त होगी और यहीं कायदे को सही तरीके से खोलना होगा, ऐसा कहना उचित होगा। कायदे की सिलसिलेवार बढ़त करने के पूर्व भी, एक और सौंदर्यपूर्ण विचार रखना चाहूँगा, और वह हैं—'दीडीअंग का विचार'।

कायदे का मुखडा और दीडीअंग विचार—(खाली से)

$_{0}$ताग्तींऽऽऽताके	तिरकिटताकतिन
तिरकिटताकतिनतिरकिट	ताकतिनताकतिननानाकिन।
$_{3}$ताकेतिरकिटताग्धिन्नाना	गिनधागेतिरकिटताग्धिन
ऽऽऽऽतिरकिटतागधिन	ऽऽऽऽतिरकिटतागधिन।

कायदे का मुख और दुगुन की शुरूआत—(खाली से)

$_{0}$ताग्तींऽऽऽताके	तिरकिटताकतिन
ताग्तींऽऽऽताकेतिरकिटताकतिन	तिरकिटताकतिनताकतिननानाकिन।
$_{3}$ताकेतिरकिटताग्धिन्नानागिनधागे	तिरकिटताग्धिनतागधिननानागिन
धाऽऽऽतिरकिटताग्धिननानागिन	धाऽऽऽतिरकिटताग्धिननानागिन।

इस तरह, कायदे की ऐसी तैयारी के साथ दमदार शुरूआत और तद्नुसार विस्तार प्रक्रिया निश्चित ही वादक की हाथ तैयारी, उसका आत्मविश्वास और वादन सौंदर्यता दर्शाती है, इसमें कोई शंका नहीं।

कायदे की विस्तार प्रक्रिया में कायदा खोलते वक्त गर महत्वपूर्ण पलटों का अंतर्भाव किया जाएँ, तो सचमुच ही वादक के वादन में चार चाँद लग जाएँ। विद्वानों ने ऐसे 'महत्वपूर्ण पलटों' को 'मुरक्का' नाम से संज्ञा दी है। 'मुरक्का' यानी बोलों का अर्क, जो पढंत और बजंत दोनों में ही अत्यंत कष्टप्रद एवं कठिनतम होता है। इन महत्वपूर्ण पलटो को दमखम के साथ आत्मविश्वास से नज़ाकतपूर्ण तरीके से बजाने में ही वादक का 'रियाज़' समझ में आ जाता हैं। 'मुरक्का वादन' केवल और केवल रियाज़ से ही मुमकीन हो पाता है। मुरक्को के रियाज़ से ही कठिनतम बोल पंक्तियाँ हाथ पर आसानी से चढ़ पाती है। विद्वानों ने असंख्य 'मुरक्को' की रचना निर्मिति कर के तबला जगत पे अनंत उपकार किए है। सचमुच, तबले के रियाज़ में 'मुरक्को' का अनन्य साधारण महत्व है। संक्षेप में, कायदे-रेले जैसी विस्तार क्षम रचनाओं के वादन प्रस्तुति में मुरक्को का स्थान महत्वपूर्ण तथा सौंदर्यपूर्ण है। प्रस्तुत कायदे के कुछ महत्वपूर्ण पलटे;

धिननानागिनधिननानागिनधागेतिर किटधिननग्धिननग्धिननानागिन

ताकेतिरकिटताग्धिन्नानागिनधागे	तिरकिटताग्धिनतागधिननानागिन + मुख + खाली
ताग्तागधिनताग्ताग्धिनताग्धिन	ताग्धिननानागिनताग्धिननानागिन
ताकेतिरकिटताग्धिन्नानागिनधागे	तिरकिटताग्धिनतागधिननानागिन + मुख + खाली

इस तरह, कायदें की विस्तार क्रिया का वादन प्रस्तुति में अपना एक अलग ही सौंदर्य है।

कायदे की तिहाई

वादन प्रस्तुति में तिहाई वादन का अपना एक अलग अस्तित्व तथा श्रेष्ठत्व है। तिहाई का महत्व अन्यतम् है। विद्वानों ने 'तिहाई' को

वादन प्रस्तुति का 'परम्मोच्च बिंदू' कहा है, जिससे तिहाई का महत्व और भी बढ़ जाता है, इसलिए एकल तबला वादन प्रस्तुति में तिहाई वादन उतना ही परिणाम कारक, प्रभावी तथा सौंदर्यपूर्ण होना जरूरी होता है। सौंदर्यपूर्ण एकल तबला वादन प्रस्तुति में तिहाई के बारे में कुछ महत्वपूर्ण विचार इस प्रकार है—जैसे की, कायदे के मुख अनुरूप तथा मुख को सही न्याय देते हुए तिहाई वादन, तिहाई में निहित गणितीय सौंदर्य, कायदे के आखिरी पलटे में से निकलने वाली तिहाई, इत्यादि। उपर्युक्त, तिहाई-प्रकार वादन विचार निश्चित ही कलात्मक और सौंदर्यपूर्ण होते है, जो वादन प्रस्तुति की समाप्ती भी सौंदर्यपूर्ण बना देते हैं।

प्रस्तुत कायदे का आखिरी पलटा और उसी से निकलने वाली एवं मुख को सही न्याय देनेवाली एक विचारपूर्ण तिहाई निम्नलिखित है—

आखिरी पलटा—

$_{\times}$ताकेतिरकिटताग्धिन्नानागिनधागे तिरकिटताग्धिनतागधिननानागिन
धाऽऽऽतिरकिटताग्धिननानागिन धाऽऽऽतिरकिटताग्धिननानागिन।+मुख+खाली

उपर्युक्त पलटे। से तिहाईः—

($_{\times}$ताकेतिरकिटताग्धिन्नानागिनधागे तिरकिटताग्धिनतागधिननानागिन
धाऽऽऽतिरकिटताग्धिननानागिन धाऽऽऽतिरकिटताग्धिननानागिन
धाऽताकेतिरकिट ताग्धिंऽऽ)$_{\times 3}$

प्रस्तुत तिहाई की समाप्ति ताग्धिंऽ इस बोल समूह पर होने से, उसका सौंदर्य और भी बढ़ जाता है। इस प्रकार, वादक के कायदे की प्रस्तुति की ऐसे सौंदर्यपूर्ण तिहाई से कि गई समाप्ति ही, प्रस्तुत सौंदर्यपूर्ण वादन प्रस्तुति का सही समापन होगा।

रेला

यहाँ पर, एक और विस्तारक्षम रचना प्रकार के सौंदर्यपूर्ण प्रस्तुति का विचार करेंगे, और वो है 'रेला'। स्पष्ट निकास, यह कायदे का वैशिष्टय है और स्पष्ट निकास के साथ-साथ 'गतिमानता' यह रेला वादन की विशेषता है। कायदा, रेला जैसी विस्तारक्षम रचना प्रकारों की प्रस्तुति में आखिरी पलटे तक वादक का 'दमसास' टिक पाना अत्यंत महत्वपूर्ण है, वादन प्रस्तुति का यह भी एक सौंदर्य है। वादक के स्पष्ट निकास, गतिमानता एवं दमसास युक्त वादन की तिहाई तक की यात्रा प्रशस्त एवं सौंदर्यपूर्ण होना ही महत्वपूर्ण है। रेले के मुख अनुरूप बोल समूहों के आधार से तिहाई लेकर रेले की मुख की शुरूआत, दीडी अंग, दुगुन, महत्वपूर्ण पलटों का वादन और सौंदर्यपूर्ण तिहाई से रेले का समापन....! रेले की सौंदर्यपूर्ण प्रस्तुति गुरुवर्य पं. अरविंद मुळगाँवकर जी द्वारा रचित एक चतुःस्त्र जाति के रेले का उदाहरण निम्नलिखित है—

रेले के मुख के वादन की पूर्व तिहाईः (खाली से)

$_{0}$धीरधीरघिडनग दिनतकधीरघीड नगधीरधीरधीर घिडनगदिनतक।
$_{3}$धाऽऽऽधीरधीर घिडनगदिनतक धाऽऽऽधीरधीर घिडनगदिनतक।

रेलाः तीनताल (चतुःस्त्र जाती) (लखनऊ बाजपर आधारित)

रचनाः गुरुवर्य पं. अरविंद मुळगाँवकर

मुखः

गधाऽऽऽघिडनग धीरधीरघिडनग धीरधीरधीरधीर घिडनगदिनतक।
$_{2}$धीरधीरघिडनग दिनतकधीरघीड नगधीरधीरधीर घिडनगदिनतक।
$_{0}$ताऽऽऽकिडनग तीरतीरकिडनग तीरतीरतीरतीर किडनगतिनतक।
$_{3}$धीरधीरघिडनग दिनतकधीरघीड नगधीरधीरधीर घिडनगदिनतक।[6]

यहाँ पर प्रस्तुत रेले के स्वरूप अनुसार, निहित बोलो के आधार पर लखनऊ घराने की ही एक गत अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जिसके वादन प्रस्तुति से रेले की समाप्ति और भी सौंदर्यपूर्ण और परिणाम कारक हो सके।

गत- तीनताल (लखनऊ घराना)

(रचना- उस्ताद वाजीद हुसेन खाँ साहब)

धाऽघिडनगतेत् ऽऽधाऽघिडनग तेत्ऽऽघिडनग तींनाकिडनग
तेत्ऽऽघिडनग तींगनगतेत्ऽऽ तेत्ऽऽघिडनग तींनाकिडनग
तेत्तेत्ऽऽताऽ घिडनगतेत्ऽऽ ताऽतिरकिटतक ताऽतिरकिटतक
तकतीटघिडनग दिनतकतकतीट घिडनगतकतीट घिडनगदिनतक
और खाली

रेला वादन प्रस्तुति से, वादक का 'दमसास' तथा 'गतिमानता' यह गुण दिखाई देता है। मेरे विचार से, प्रभावी तथा सौंदर्यपूर्ण तबला वादन प्रस्तुति का एक महत्वपूर्ण रचना प्रकार है—'रेला'।

वादक, अगर वादन के पूर्व, उपर्युक्त गत की उतनी ही स्पष्टता से प्रभावी 'पढंत' करे और फिर बजाए, तो वह एक सौंदर्यपूर्ण प्रस्तुति होगी। तबला वादन प्रस्तुति में 'पढंत' का महत्व अन्यतम् है। तबला वादन प्रस्तुति का महत्वपूर्ण सौदर्यतत्व है, 'पढंत'। विद्वानों का कथन है कि, 'जिनकी जुबान साफ, उनका वादन उतना ही साफ,' जैसी पढंत वैसी बजंत। मेरे खयाल से, पहले पढंत और फिर बजंत का ये सुत्र सौंदर्यपूर्ण प्रस्तुति में प्रभावी सिद्ध होता है। तबला वादक ने पढंत एवं बजंत के संदर्भ में अपने गुरुजनों का तथा विद्वान कलाकारों का जरूर आदर्श लेना चाहिए और तद्नुसार आचरण भी करना चाहिए। वर्तमान में, विशेष रूप से पढंत एवं बजंत के संदर्भ में सभी तबला साधकों के आदर्श है—शोधार्थी के गुरु तबला वादक पं. आमोद दंडगे (कोल्हापुर) और पंजाब घराने के सुप्रसिद्ध तबला वादक पं. योगेश समसी। तबला साधकों ने ऐसे कलाकारों को जरूर सुनना चाहिए और अनुभूति लेनी चाहिए। तबला वादक ने अपने प्रभावी तथा सौंदर्यपूर्ण प्रस्तुति हेतु, प्रमुखतः प्रधान रूप में अपने गुरुजनों को बार-बार सुनना चाहिए और तद्नुसार अनुकरण भी करना चाहिए। उसी तरह, अपने गुरुजनों के वादन के साथ-साथ, वर्तमान के विद्वान कलाकारों के वादन प्रस्तुति को भी देखना और सुनना चाहिए। इन सबका विधायक सूक्ष्म तथा सर्वरूपेण परिणाम, वादक के वादन प्रस्तुति पर निश्चित रूप से

होगा, इसमें कोई भी शंका नहीं। इसी में, वादन प्रस्तुति की सौंदर्यता होती है, ऐसा अनुभव है। अपनी वादन प्रस्तुति में वादक, अगर रचना प्रकारों की विशेषतः खानदानी रचनाओं की, बंदिशों की पढ़ंत कर के उनका वादन करें, तो वह और भी सौंदर्यपूर्ण होगा, इसलिए सौंदर्यपूर्ण वादन प्रस्तुति का एक और महत्तवपूर्ण विचार है—'पढंत'। वादक ने अपनी प्रस्तुति में इन सभी महत्वपूर्ण अंगों का विचार करना चाहिए तथा उपयोग भी करना चाहिए।

पूर्वसंकल्पित रचना प्रस्तुति विचार—

विस्तारक्षम रचनाओं के वादन प्रस्तुति की चर्चा के उपरान्त, अब आगे पूर्वसंकल्पित रचनाओं की सौंदर्यपूर्ण प्रस्तुति के बारे में विचार करेंगे। तबला वादन में प्रत्येक रचना प्रकारों की एक निश्चित लय होती है तथा उसी निश्चित लय में संबंधित रचना प्रकारों का वादन सौंदर्यपूर्ण होता है। जैसे, विलंबित लय में पेशकार वादन, मध्य लय में कायदा तथा द्रुत लय में रेला और पूर्वसंकल्पित रचनाएँ, इत्यादि। वादक ने वादन प्रस्तुति में रचना प्रकार के अनुसार लय की, गति की निश्चित करना भी सौंदर्यपूर्ण वादन प्रस्तुति का महत्वपूर्ण अंग होगा। यहाँ पर, वादक ने लय का पूर्वनियोजन अपने दमसास अनुसार करना आवश्यक है, क्योंकि केवल 'गती' ही सौंदर्य न होते हुए गती के साथ स्पष्ट निकास अत्यंत महत्वपूर्ण है। मेरे विचार से, वादक ने इस अंग का गंभीरता से सूक्ष्म विचार करना आवश्यक है।

मेरे गुरुवर्य पं. आमोद दंडगे, 'गत' की एक अर्थपूर्ण व्याख्या करते हुए अपने 'सर्वांगीण तबला' इस मराठी ग्रंथ में लिखते है, "निसर्गातील विविध घटनांच्या गतीची (चालीची) अनुभूती देणारी समेपूर्वी संपल्याने पुनरावृत्त होणारी, तिहाईसहीत अथवा विरहित तसेच रचनाकाराच्या अमोघ कल्पनाषक्ती व परिपक्वतेचे दर्शन घडवणारी तबल्याच्या भाषेतील काव्यमय रचना म्हणजे गत होय।"[7]

पूर्वसंकल्पित रचनाओं के, जैसे—गत, गत टुकड़े, चक्रदार, तिहाई, नौहका, छंद, चलन, रौ, इत्यादि, वादन प्रस्तुति में, वादन उतना ही जोरदार तथा दमखम का बजाना होना आवश्यक होता है, साथ ही स्पष्ट एवं योग्य निकास की अपेक्षा होती है। एकल तबला वादन प्रस्तुत में, पूर्वसंकल्पित रचनाओं की वादन प्रस्तुति का एक अलग ही महत्व होता है, एक अलग ही माहौल होता है। पूर्वसंकल्पित रचनाओं कि सौंदर्यपूर्ण प्रस्तुति में 'पढंत' की भूमिका बहुत ही एहम् होती है। वादक, रचनाकारों का नाम आदब से लेते हुए गेयता है साथ, स्पष्टता से पढंत करते है और इसी पढंत में ही प्रस्तुत रचना का महत्व, सौंदर्य झलकना शुरू हो जाता है। इसी प्रभावी पढंत के साथ, रचना की प्रभावी बजंत की जाती है। इस तरह, एक के बाद के बंदिशे प्रस्तुत करने का यह सिलसिला जारी रहता है और वादन प्रस्तुति सौंदर्यपूर्ण करने हेतु वह महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मेरे विचार से, विस्तारक्षम रचनाओं की सौंदर्यपूर्ण प्रस्तुति एकल तबला वादन का 'पूर्वार्ध' है और पूर्वसंकल्पित रचनाओं की सौंदर्यपूर्ण प्रस्तुति उत्तरार्ध है, इसी से हमें, पूर्वसंकल्पित रचनाओं का महत्व समझ में आता है। वादक की एकल तबला वादन प्रस्तुति सौंदर्यपूर्ण तथा प्रभावशाली बनाने का एक और प्रभावी माध्यम है—पूर्व संकल्पित रचनाओं का वादन...!

वादक अपनी प्रस्तुति में घरानेदार बंदिशों की पढंत तथा बजंत, घराने के अनुशासन में रहकर सही निकास के साथ, जब पेशकश करता है, तब उसकी प्रस्तुति की शोभा देखते ही बनती है। वादक ने अपनी कला प्रस्तुति सौंदर्यपूर्ण बनाने हेतु, गुरुजनों तथा विद्वानों द्वारा रचित बंदिशों का, पारंपारिक रचनाओं का वादन प्रस्तुति में स्वागत करना चाहिए। वादक ने अपनी प्रभावी तथा सौंदर्यपूर्ण वादन प्रस्तुति के लिए तबले की सभी रचना प्रकारों को सही-सही न्याय देते हुए उनका आत्मविश्वास से वादन करना आवश्यक होता है। मेरे विचार से, ऐसी विचारपूर्ण वादन पद्धति यानी सौंदर्यपूर्ण वादन प्रस्तुति की पूर्णरूप से सही समापन है, ऐसा कहना उचित होगा।

उपरोक्त सभी महत्वपूर्ण अंगों का अंतर्भाव वादक ने अपनी प्रस्तुति में करना और भी महत्वपूर्ण होता है। यहीं प्रभावी तथा सौंदर्यपूर्ण वादन प्रस्तुति का महत्वपूर्ण सूत्र है। तबले के सभी घरानों के तबला वादक विद्वान कलाकारों ने तबले की असंख्य सौंदर्यपूर्ण रचनाओं कि निर्मिति कर तबला जगत पर अनंत उपकार किए है। वादक की यह जिज्ञासा होनी चाहिए की, ऐसी सुंदर-सुंदर पारंपारिक रचनाओं को सीखे, अध्ययन करें तथा उसकी वादन प्रस्तुति करें। इस तरह, विचार किया जाए तो, एकल तबला वादन प्रस्तुति में पारंपारिक रचना प्रकारों का तथा बंदिशों का अंतर्भाव करना, उन्हें प्रधानता देना यह प्रभावी तथा सौंदर्यपूर्ण वादन प्रस्तुति का ही द्योतक है।

प्रो. अजय अष्टपुत्रे के अनुसार, "स्वतंत्र तबला वादन की प्रक्रिया प्रत्येक की एक-दूसरे से भिन्न भिन्न होती है। स्वतंत्र तबला वादन प्रस्तुत करते समय इसकी वादन तथा इसके आशय को समझना अत्यंत आवश्यक है। स्वतंत्र तबला वादन पेश करते समय विधिवत वादन पद्धति के अंतर्गत आनेवाली रचनाओं का स्थान या क्रम निश्चित करना होता है। तबला वाद्य के अन्तर्गत बजने वाले दाएँ और बाएँ के वर्णो के बीच में समरसता का होना अर्थात् वर्णो में तारतम्यता होना आवश्यक है। इसके अभाव में वादन के प्रस्तुतिकरण में गतिरोधक उत्पन्न हो सकता है। किसी भी घराने के व्यक्तित्व को सँवारने या बनाने के लिए कई सौंदर्यात्मक तत्वों का समावेश करना पड़ता है।"[8]

सौंदर्यपूर्ण एकल तबला वादन प्रस्तुति के संदर्भ में, आगे और भी कुछ महत्वपर्ण विचार रखना चाहूँगा—प्रस्तुत, 'सौंदर्यपूर्ण एकल तबला वादन प्रस्तुतिः एक चिंतन', इस अध्याय में, विविध अंगों से की गई चर्चा के विचारों का सार उपरोक्त तथ्यों के आधार पर सबसे महत्वपूर्ण अंग है, वादक का रियाज़। वादक ने किया हुआ रियाज़ ही प्रत्यक्ष प्रस्तुति में काम आता है, वह प्रत्यक्ष प्रस्तुति में अपना रियाज़ ही लेकर बैठता है। प्रामाणिकता से किया गया रियाज़ ही, आत्मविश्वासपूर्ण वादन की अभिव्यक्ति होती है और तबला वादक ने जिन-जिन चीजों का रियाज़ किया है, वही चीज़े वह सक्षमता से प्रस्तुत कर पाता है,

ऐसा शोधार्थी का पूर्व अनुभव है। इसलिए, तबला वादन प्रस्तुति, वादक के अब तक के किए गए अभ्यासपूर्ण रियाज़ पर ही निर्भर होती है। मेरे विचार से, प्रभावी तथा सौंदर्यपूर्ण प्रस्तुति का महत्वपूर्ण अंग है—'तबले का रियाज़'।

पेशकार, यह स्वतंत्र तबला वादन में विस्तारक्षम रचना प्रस्तुति का एक महत्वपूर्ण अंग है। पेशकार यह वादक का एक स्वतंत्र विचार होता है। वादक की बुद्धिमत्ता तथा वादन कौशल्य की अभिव्यक्ति होती है—पेशकार वादन। पेशकार प्रस्तुति में वादक का बौद्धिक-मानसिक-शारीरिक रियाज़ झलकता है। इसलिए, प्रभावी तथा सौंदर्यपूर्ण प्रस्तुति में विस्तारक्षम रचना के अंतर्गत 'पेशकार' की भूमिका एहम् होती है। वर्तमान में, पेशकार वादन में नवीन विचार एवं नवीन परिवर्तन दिखाई दे रहे है, जो विधायक है। पेशकार वादन में, विविध जाति के पेशकार, लघु का पेशकार, इत्यादि परिवर्तन दिखाई दे रहे है। उसी तरह, पेशकार से ही कायदे की ओर बढ़त करने की नवीनता भी दिखाई दे रही है। मेरे विचार से, वादक का यह वादन कौशल्य तथा वादन विकास है, जो सौंदर्यपूर्ण है।

तबला वादन में प्रत्येक रचना प्रकारों का अपना एक अस्तित्व है, श्रेष्ठत्व है। प्रत्येक रचना प्रकारों का अपने आप में एक महत्व होता है, उसी तरह प्रत्येक रचना प्रकारों की अंतर्भूत लय भी होती है, जो सुनिश्चित होती है। तबला वादक को अपनी प्रस्तुति में इसका सूक्ष्मता से विचार करना चाहिए तथा रचना प्रकार अनुसार लय अंग की सौंदर्यता बरकरार रखनी चाहिए। रचना प्रकारों का सौंदर्य उसमें निहित लय में ही होता है, तद्नुसार किया गया वादन निश्चित ही सौंदर्यपूर्ण होता है। जैसे, 'धातीटधातीट धाधा' इस दिल्ली घराने के कायदे को अधिक गतिमान कर के बजाया जाए तो, वह केवल शारीरिक वादन ही रह जाएगा, उसका मूल वादन सौंदर्य नष्ट हो जाएगा और वह रचना प्रकार निरस लगने लगेगा। ठीक इसी तरह, रेलें की भी एक लय होती है, जिसमें गती के साथ-साथ स्पष्टता भी महत्व रखती है। वादक ने 'लयअंग' का विचार करके उसे प्रबल करना चाहिए। इस तरह, प्रत्येक रचना प्रकार की अपनी एक निश्चित लय होती है, जिसमें वह शोभायमान होता है और वादन प्रस्तुति सौंदर्यपूर्ण होती है। प्रभावी तथा सौंदर्यपूर्ण प्रस्तुति का यह 'लयअंग', महत्वपूर्ण घटक है।

पारंपारिक रचनओं के वादन में वादक की तालीम, मेहनत तथा साहित्य संपन्नता नजर में आती है। तबले के रियाज़ में और प्रत्यक्ष प्रस्तुति में पारंपारिक रचनाओं को प्रधानता देना बहुत ही आवश्यक है। अपने रियाज़ी हाथ से इन रचनाओं की प्रभावी प्रस्तुति कर के वादक अपना वादन सौंदर्यपूर्ण बनाता है। साहित्य संपन्नता यह गुणी वादक का लक्षण होता है।

प्रभावी तथा सौंदर्यपूर्ण एकल तबला वादन प्रस्तुति के संदर्भ में, मेरे प्रथम गुरु पं. गोविंद माजगाँवकरजी का एक अनुभवपूर्ण यहाँ उल्लेखनीय होगा वे अपने वक्तव्य में हमेशा कहते थे कि, 'देखो बेटा, अपनी वादन प्रस्तुति में, कितना कुछ बजा दिया? और क्या-क्या बजाया? यह बिलकुल मायने नहीं रखता, बल्कि जो कुछ भी बजाया, क्या वह सौंदर्यपूर्ण था? प्रभावी था? इसके बारे में गहराई से सोचना। तबला थोड़ा ही बजाओ, लेकिन आत्मविश्वास से और सच्ची लगन से। साहित्य के पीछे बिलकुल ना दौड़ो, जो कुछ भी गुरुजनों से प्रसाद मिला है, बस उस पर ही पूर्ण विश्वास रख कर उन चीजों का ईमानदारी से रियाज़ करो और सुंदरता से उसकी पेशकश करों। प्रस्तुत की गई एक ही रचना से ही तुम्हारा परिचय मिल जाना चाहिए, साथ ही तुम्हारी तैयारी भी दिखाई देनी चाहिए और सबसे महत्वपूर्ण बात—तुम्हारे वादन में तुम्हारे गुरु का परिचय अपने आप ही मिल जाता है, तालीम भी समझ जाती है, इसलिए प्रसिद्धि के पीछे भी मत दौड़ो। प्रथम, खुद अपने वादन को सौंदर्य की नजर से देखो तभी औरो को भी वह अनुभव दे सकोगे। यह विचार सदैव रखते हुए अपने वादन के प्रति आत्मचिंतन जरूर करना। इसलिए, गुरु पर श्रद्धा सबसे जरूरी है। प्रामाणिक रियाज़ करते हुए सौंदर्यपूर्ण वादन प्रस्तुति के लिए हमेशा तत्पर रहना।'

ज्येष्ठ तबला वादक पं. सुधीर माईणकर सफल कलाकार की व्याख्या करते हुए अपने ग्रंथ 'तबला वादन कला और शास्त्र' में लिखते है, "कलाकार की सफलता में उसकी तपस्या का बड़ा हिस्सा होता है। तपस्या के बिना केवल प्रतिभा के बल पर कलाकार बड़ा हो ही नहीं सकता। कला-क्षेत्र में रियाज़ के लिए कोई पर्याय नहीं है; क्योंकि संगीत-कला एक क्रियात्मक कला है। केवल नैसर्गिक गुणवत्ता मनुष्य को बड़ा नहीं बनाती। एक बार ऐसी गुणवत्ता न भी हो, किंतु प्रदीर्घ कलात्मक सातत्यपूर्ण मेहनत एवं मार्गदर्शन हो, तो भी कलाकार बड़ा हो सकता है।"[9]

सौंदर्यपूर्ण वादन प्रस्तुति हेतु, वादक को सूक्ष्म विचारों से खुद को ढालना महत्वपूर्ण है। वादक ने वादन हेतु, हमेशा अपने विचार तथा विचारों की दिशा सौंदर्यपूर्ण रखनी चाहिए, क्योंकि सौंदर्यपूर्ण वादन विचारों की ही आचरित आवृत्ति होती है—'सौंदर्यपूर्ण वादन प्रस्तुति। इसलिए, कहते भी है—'जैसा विचार वैसा ही आचार'।

एकल तबला वादन प्रस्तुति, तीनताल में प्रातिनिधिक रूप से होती है और तीन ताल को ही प्रधानता दी जाती है, यह बिलकुल सत्य है। 'त्रितालेत्तर तालों में एकलवादन करना यानी प्रभावी वादन', यह एक गलत-धारणा है। त्रितालेतर वादन यह जिसका-उसका निजी विचार है, सोच है, उसकी मेहनत है, साधना है तथा प्रतिभा है। लेकिन, क्या हम अन्य तालों में वादन प्रस्तुति, तीनताल जितनी ही सौंदर्यपूर्ण बनाकर उसे सही न्याय दे पा रहे हैं? या नहीं? इसका सूक्ष्म विचार वादक ने करना आवश्यक है तथा अनुरूप सौंदर्यपूर्ण वादन प्रस्तुति करना जरूरी है। एकल तबला वादन प्रस्तुति, चाहे कोई भी ताल में हो, लेकिन वह प्रस्तुति प्रभावी होने के साथ-साथ सौंदर्यपूर्ण होना और भी महत्वपूर्ण है। एकल तबला वादन प्रस्तुति में सर्वांगीण दृष्टिकोण से तीनताल का किया गया अभ्यासपूर्ण विचार एवं वादन निश्चित ही सौंदर्यपूर्ण वादन की प्रचिती होगी। तीनताल वादन प्रस्तुति में विविध लय-लयकारी अंग विचार, विविध जाती में रचना प्रकारों का वादन, इत्यादि निश्चित ही

प्रभावी एवं सौंदर्यपूर्ण सिद्ध होगा।

प्रभावी तथा सौंदर्यपूर्ण एकल तबला वादन प्रस्तुति हेतु, वादक ने तबले का विकास और आधुनिकता का निश्चित रूप से अध्ययन करना जरूरी है। वर्तमान में, तबले में हुए विधायक बदलाव तथा उसके परिणाम समझ कर तद्नुसार अपने वादन में सौंदर्यवृद्धि करनी चाहिए। दायाँ-बायाँ की बनावट में भी आधुनिकता दिखाई दे रही है, जो काफी सौंदर्यपूर्ण है। वादक को इस आधुनिक बदलाव का स्वागत करना चाहिए तथा तद्नुसार अच्छे दाएँ-बाएँ का चुनाव करना चाहिए। आज, इलेक्ट्रॉनिक्स टेक्नॉलॉजी की क्रांति प्रगति पथ पर है। वादक की यह भी जिज्ञासा रहनी चाहिए, सौंदर्यपूर्ण तबला वादन प्रस्तुति हेतु, माइक्रोफोन, ध्वनिव्यवस्था (साउंड सिस्टम) का अभ्यास करें। यह सभी बातें, प्रभावी तथा सौंदर्यपूर्ण वादन प्रस्तुति में काफी मायने रखती है। यही मूलभूत बातें, एकल तबला वादन प्रस्तुति हेतु, पोशक एवं अनुरूप प्रसन्न वातावरण बनाने की महत्वपूर्ण वजह बन जाती है। इसलिए, वादन के अपनी प्रस्तुति में, इन सभी का अभ्यासपूर्ण तरीके से स्वागत करना उतना ही जरूरी होता है।

प्रभावी तथा सौंदर्यपूर्ण वादन प्रस्तुति के लिए वादन विकास कौशल्य के साथ-साथ वादन के तकनीक को (तंत्र) भी अवगत करना तथा विकसित करना जरूरी है, इसलिए वादक ने वादन की तकनीक समझ लेना भी महत्वपूर्ण है।

अंत में सबसे महत्वपूर्ण है—'चिंतन'। प्रत्येक वादक ने अपने वादन का आत्मचिंतन करना बहुत जरूरी है। संगीत कला का मूल उद्देश्य होता है 'आत्मिक समाधान'। क्या मेरे खुद की वादन प्रस्तुति से मैं संतुष्ट हूँ? आनंदित हूँ? आत्म समाधानी हूँ?, अगर इसका जवाब 'हाँ' है, तो वह वादक अपनी सौंदर्यपूर्ण एकल वादन प्रस्तुति से गुणीजनों तथा गुरुजनों की सच्ची दाद लेने से बिलकुल नहीं चूँकता... वाह! क्या बात है। बहुत अच्छा...!!! और... इस तरह, अपनी सौंदर्यपूर्ण वादन प्रस्तुति से वह तबला साधक आत्मसंतुष्टि की अनुभुति लेता है, जो हर संगीत साधक का अंतिम उद्देश्य होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. साक्षात्कारः श्रुति, सड़ोलीकर, ज्येष्ठ शास्त्रीय गायिका, दिल्ली, दि. नवंबर, 16, 2019.
2. साक्षात्कारः अष्टपुत्रे, अजय, मार्गदर्शक गुरु, बड़ोदरा, दि. सितंबर, 28, 2020.
3. साक्षात्कारः गुलवाडी, ओंकार, ज्येष्ठ तबला वादक, बड़ोदरा दि. सितंबर, 17, 2019.
4. मुळगाँवकर, अरविंद, तबला, हिंदी, लुमिनस बुक्स, प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 2018, पृ. 118.
5. मुळगाँवकर, अरविंद, इज़ाजत, हिंदी, अभिनंदन प्रकाशन, कोल्हापुर, प्रथम संस्करण, 2008, पृ. 15.
6. वही, पृ. 110.
7. दंडगे, आमोद, सर्वांगीण तबला, मराठी, भैरव प्रकाशन, कोल्हापूर, चतुर्थ आवृत्ती, 2017, पृ. 80.
8. अष्टपुत्रे, अजय, जनवरी, 2018, 'स्वतंत्र तबला वादन में अजराड़ा घराने का महत्व', नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक, सम्पादक : रवि शर्मा, वर्षः 6, सेमिनार विशेष अंक, पृ. 18.
9. माईणकर, सुधीर, तबला वादन कला और शास्त्र, हिंदी, गांधर्व महाविद्यालय, प्रकाशन, प्रथम संस्करण, मिरज, 2000, पृ. 283, 284.